

Atal Bihari Vajpayee Vishwavidyalaya Bilaspur (C.G.)

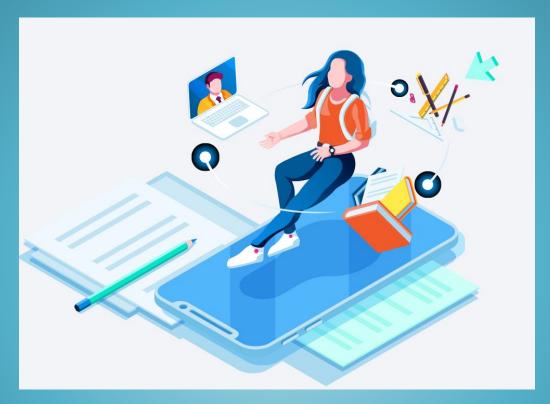
A

Webinar

On

Challenges And Opportunities in Technology-Driven Higher Education in Chhattisgarh During and After Covid-19

Date: May 9th, 2020



Dr. H.S. Hota

(Convener)

Head, Dept. of Computer Science and Applications

Atal Bihari Vajpayee University, Bilaspur (C.G.)

Report

On

Challenges and Opportunities in Technology-Driven Higher Education in Chhattisgarh During and After COVID-19.

Date: May 9th, 2020

The closure of physical classrooms forced educators and students to swiftly transition to online learning platforms. This shift, though initially challenging, has accelerated the adoption of digital tools and platforms. Teachers have embraced a variety of online teaching methods, making education more accessible and flexible. The necessity of remote learning prompted educators to explore innovative teaching methods. Virtual classrooms, interactive multimedia content, and collaborative online projects have become integral parts of the higher education landscape. Teachers are employing a diverse range of technological tools to create engaging and effective learning experiences. Students, too, have risen to the occasion by developing digital literacy skills. The pandemic has necessitated proficiency in online research, collaboration, and communication. Students are increasingly comfortable with e-learning platforms, virtual discussions, and collaborative online projects, preparing them for a techdriven future. The virtual nature of education during the pandemic has facilitated global collaboration. Students and educators are engaging in cross-cultural discussions, joint projects, and knowledge exchange with peers from around the world. This interconnectedness has broadened perspectives and enriched the learning experience.

While the COVID-19 pandemic disrupted the conventional higher education paradigm, it also catalysed a transformation towards a more adaptable, technology-driven, and globally connected educational ecosystem. The resilience, innovation, and commitment demonstrated by teachers and students during these challenging times have not only mitigated the immediate impact of the crisis but have positioned higher education for a more dynamic and inclusive future. The lessons learned during this period will likely shape the evolution of education for years to come.

Keeping all the above in mind university has planned to organize a webinar on technology driven education and the one-day webinar aimed to address the challenges faced by teachers and students in the state of Chhattisgarh regarding online teaching and learning in the wake of the COVID-19 pandemic. Held amidst a nationwide lockdown, the event brought together seven Vice-Chancellors from various universities to discuss the critical issues and potential opportunities.

The expert speakers at the webinar were the Vice-Chancellors of prominent universities of Chhattisgarh and other part of the country, namely:

Prof. R.P. Tiwari, Vice-Chancellor, H.S. Gour Central University, Saugar

Prof. Prakash Mani Tripathi, Vice-Chancellor, IGNTU Amarkantak

Prof. Piyush Ranjam Agarwal, Vice-Chancellor, Awadesh Pratap Singh University, Rewa

Prof. K.L. Verma, Vice-Chancellor, Pt Ravishankar University, Raipur

Prof. M.K. Verma, Vice-Chancellor, CSVTU, Bhilai.

Prof. G.D. Sharma, Vice-Chancellor, Atal Bihari Vajpayee University, Bilaspur

The Vice-Chancellors emphasized the importance of online teaching and learning during the pandemic and agreed to provide necessary training to both teachers and students. They highlighted the need for developing courses in both English and Hindi, ensuring that the econtent is easily understandable to students. The speakers acknowledged that technology can significantly enhance the quality of higher education and stressed the ongoing training programs in online mode across the state.

Dr. H.S. Hota, the convenor of the program, shared initiatives taken by universities to train teachers and students for online education. He mentioned that the Department of Computer Science and Application organized numerous webinars in April 2020 and planned to conduct more in the future. Dr. Hota also highlighted a 15-day workshop organized just before the pandemic in collaboration with ICT Academy, IIITDM Gwalior on ICT for teaching and learning.

Prof. G.D. Sharma emphasized that universities in Chhattisgarh are actively supporting students and teachers in learning online tools and software. He acknowledged the pivotal role universities play in adapting to the new normal of online education.

The concluding remarks and vote of thanks were delivered by Dr. Sudheer Sharma, the Registrar of the university, expressing gratitude to all the speakers, participants, and organizers for their valuable contributions.

The webinar provided a platform for Vice-Chancellors to share insights, discuss challenges, and propose solutions for technology-driven higher education in Chhattisgarh during and after the COVID-19 pandemic. The consensus was on the pivotal role of online education and the need for continuous training to ensure effective teaching and learning in the digital era. The commitment of universities to support students and faculty during these challenging times was evident, promising a positive transformation in the higher education landscape of the state.



Convener & Vote of Thanks



Dr. H.S. Hota (Convener) HOD Computer Sciene & Application Department Atal Bihari Vajpayee University, Bilaspur (C.G.) Mo.no. 9425222658

Vote of thanks by Dr. Sudhir Sharma (Registrar) Atal Bihari Vajpayee University Bilaspur (C.G.)



Photographs & News Coverage





Rajdhani - 11 May 2020 - 11raj1

कोरोनाकाल की चुनौतियों को अवसर में बदलने रविवि समेत 7 विवि के कलपतियों का मंथन

उच्च शिक्षा में ज्यादा से ज्यादा कोसे ही आनलाइन

नवभारत खुरो।रायप्र. www.navabharat.org

कोरोनाकाल की चनौतियों को किस तरह से अवसर में बदला जाए, इसे लेकर उच्च शिक्षा में मंथन शरू हो गया है. पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, छत्तीसगढ स्वामी विवेकानंद तकनीकी विश्वविद्यालय. बिलासपुर विश्वविद्यालय समेत 7 विश्वविद्यालयों के कुलपतियों ने वेबिनार में ज्यादा से ज्यादा कोर्स ऑनलाइन करने पर जोर दिया, उन्होंने कहा है कोरोनाकाल और इसके बाद

ये कहा कुलपतियों ने

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के.एल. वर्मा ने कहा कि कोरोना संक्रमण से उपजी परिस्थितियों ने सभी को ऑनलाइन शिक्षण की प्रक्रिया अपनाने को मजबर कर दिया है. प्राध्यापक टेक्नोलॉजी के माध्यम से शिक्षण सामग्री विद्यार्थियों को भेज रहे हैं. आने वाले समय में ऑनलाइन शिक्षण को लेकर टेनिंग पर जोर देने की जरूरत है, इसके साथ ही शिक्षा में गणवत्ता लाने टेक्नोलॉजी का उपयोग करना होगा. छत्तीसगढ़ स्वामी विवेकानंद तकनीकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. एम.के. वर्मा ने कोरोनाकाल को एक अवसर बताते हुए कहा कि यह ऑनलाइन की दिशा में जाने का अवसर है. जरूरी है कि विद्यार्थियों को ऑनलाइन पढ़ाई के लिए ट्रेंड करें. बिलासपुर युनिवर्सिटी के कलपति प्रो. जी. डी. शर्मा ने कहा कि परिस्थिति को देखते हुए ऑनलाइन शिक्षा हमें अपनाना होगा. 40 प्रतिशत पाठ्यक्रम ऑनलाइन करने की जरूरत है. हालांकि उन्होंने कहा कि क्लासरूम शिक्षा का कोई विकल्प नहीं है.

भी वीडियो लेक्चर, ऑनलाइन स्टडी समेत टेक्नोलॉजी के उपयोग उच्च शिक्षा में होने चाहिए.

कोरोना संक्रमण के चलते प्रदेश के विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों की परीक्षाएं स्थगित हैं. यही स्थिति दसरे राज्यों में भी है, प्रदेश में एक तरफ कलपतियों की कमेटी परीक्षा कैसे कराई जाएं और कोर्स कैसे पुरे करें? इसे लेकर उच्च शिक्षा विभाग के कहने पर डॉफ्ट बना रही है. वहीं कलपति आपस में मंथन भी कर रहे हैं कि इस संकटकाल को अवसर • शेष पेज 2 पर



08-May-2020 null Page 2

परिचर्चा • तकनीक को लेकर आ रही समस्या व सुझाव के लिए शिक्षक भी जुड़ सकते हैं

कोविड-१९ ने किया उच्च शिक्षा को ठप, ऑनलाइन पद्धित में आ रही परेशानी व चुनौती पर कल करेंगे ७ कुलपित मंथन

एजुकेशन रिपोर्टर | बिलासपुर

कोरोना वायरस कोविड-19 ने उच्च शिक्षा को पूरी तरह ठप कर दिया है। पढ़ाई सहित अन्य प्रक्रियाएं भी हो पढ़ाई साहत अन्य प्राक्षनाए भा बंद हो गई हैं, क्योंकि उच्च शिक्षा में कार्यत शिक्षकों को ऑनलाइन पद्धति की जानकारी बहुत ही कम है। इस कारण वे ऑनलाइन के माञ्चम से छातों से जुड़ नहीं पा रहे हैं। वॉडियो लेक्बर भी नहीं बना पा रहे हैं। दूसरी तरफ ग्रामीण एरिया के छात्र भी ऑनलाइन पद्धति

संभावनाएं हैं। वेबिनार के माध्यम से हो रहे मंधन में इस विषय पर चर्चा होगी कि वर्तमान समय में शिक्षकों को तकनीकी उपयोग में क्या परेशानियां आ रही हैं, इसमें क्या परशानिया आ रहा है, इसम और क्या सुधार किया जा सकता है, लॉकडाउन के बाद ऑनलाइन पद्धति का उपयोग करने की जरूरत पड़ेगी क्या, विकल्प क्या हो सकता है? ग्रामीण एरिया के छात्रों के लिए किस विकल्प का उपयोग किया जा सकता है। साथ ही विश्व विद्यालय अनुदान आयोग के अध्यादेश मूक

इन कुलपतियों के बीच होगा मंथन

इन विषयों पर अटल बिहारी वाजपेयी यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. जीडी इन तथाया पर अटल व्यवता वाज्यभा कृत्यसदा? क कुल्पता प्रा. जांच प्रमा, ओपन पृत्रविदेश के कुल्पती हों, को गोमल सिंह, एं. गीराशंकर, शुक्त यूनिवर्सिटी के कुल्पती डॉ. केशरी लाल वर्गा, स्वागी विवेकतंद टोनिम्बल यूनिवर्सिटी के कुल्पती डॉ. एक्से वर्गा, डॉ. हर्राशंकर गो ऐस्त्र यूनिवर्सिटी गांक के रामखें, प्रमात कांग्रों, अस्त्रकर व्युनिवर्सिटी के कुल्पती डॉ. फक्षारा मनी विश्वती, अव्योश प्रताप यूनिवर्सिटी रोवा के कुतपति डॉ. पीयूप रंजन अग्रजाल तकनीकी को लेकर तमाम विषयों पर चर्चा करेंगे। चर्चा के बाद इसकी रिपोर्ट तैयारी कर एमएचआरी, यूजीसी और उच्च शिक्षा विभाग को भेजेंगे।

आज शाम तक होगा पंजीयन

समस्या बताने मिलेंगे 15 मिनट

अब मधन करमा मधन 9 मह को इस एन्ट्रस्थन के हिस्साब स छात्रा मह का रात 3 बन तक प्रवारन कर रोगार 3 से साम 5.5 बने तक को 30 जितार महाई और प्रधित महानूक हो पंजीयन हिस्सूक है। पंजीयन हिस्सूक है। पंजीयन के लिए लिंक https://forms.glc/ संदर्भ में केबिंड-19 के रीत प्रजान ऑफ्टाइना अटल बृनिवर्सिटी के 10xXvzjgg726161.7 पर वा फिर उच्च किख के उपयोग में ऑनलाइन ींगीना डिपार्टमेंट ने इसे लागू कर उटल वृनिवर्सिटी को वेक्साइट पर लिंक स्वनीकी की समस्या, चुनीती और लिया है।

कुलपतियों की चर्चा के बाद भाग लेने वाले शिक्षकों को भी 15 मिनट का समय ऑनलाइन तकनीकी में आ रही समस्या और आगे की चुनौती पर सुझाव दे सकेंगे।



10-May-2020 null Page 4

कुलपितयों ने कहा-20%कोर्स आनॅलाइन हो, वीडियो लेक्चर ऐसे हों, जिन्हें छात्र समझ सकें

कोविड-१९ के कारण उच्च शिक्षा की ऑनलाइन पद्धति की परेशानियां व चुनौतियों पर ७ कुलपतियों का मंथन, वेबिनार में १५३ शिक्षकों ने िलया भाग

कोरोना वायरस कोविड-19 ने उच्च वर्चुअल क्लास व लैब की तरफ सभी शिक्षा विभाग को उप कर दिया है। यूनिवर्सिटी को बढ़ना होगा। पीएचडी इस पर मध्यप्रदेश व छत्तीसगढ के 7 को आरडीसी, डीआरसी ऑनलाइन हो। कुलपतियों ने मंधन किया। वेबिनार ऑनलाइन शिक्षा के लिए स्कुल स्तर पर विकल्प नहीं है, पर परिस्थित का संचालन एयु के कंप्युटर विभाग ही छात्रों को कंप्युटर की शिक्षा देनी होगी। को देखते हुए ऑनलाइन शिक्षा के विभागाध्यक्ष डॉ. एचएस होता, डॉ. तकनीकी सिस्टम के तहत युनिवर्सिटी सीमा बेलोरकर ने किया। इस पर सभी को भी अपने आप को डेवलपर करने कुलपति ने कहा कि कम से कम 20 की जरूरत। कंप्यूटर विभाग के अलावा प्रतिशत कोर्स ऑनलाइन करना होगा। अन्य विभाग के शिक्षक व कर्मचारियों शिक्षकों के साथ-साथ छात्रों को भी को प्रशिक्षित करना होगा। आभार प्रदर्शन लिए सिलेबस में भी बदलाव ऑनलाइन शिक्षा के लिए ट्रेंड करना कुलसचिव डॉ. सुधीर शर्मा ने किया। करने की जरूरत है। होगा। ऑनलाइन वीडियो लेक्चर ऐसे. वीबनार में कुल 153 शिक्षकों ने भाग तैयार हों, जिसे ग्रामीण एरिया के छात्र भी लिया। डॉ. यूके श्रीवास्तव, डॉ. डीके आसानी से समझ सकें। ग्रामीण एरिया में श्रीवास्तव, डॉ. कावेरी दाभड़कर, इंटरनेट कनेक्टिविटी की समस्या है, वहां इमरान अली ने प्रश्न पूछे।

के कॉलेजों में विडियो लेक्बर पेनड्राइव प्रो.जीडी शर्मा, अटल डॉ. बंशगोपाल सिंह, ओपन या डीवीडी के माध्यम से भेजा जाए।

युनिवर्सिटी बिलासप्र

परीक्षा नहीं होने से छात्र तनाव में हैं। क्लास रूम शिक्षा का कोई हमें अपनाना होगा। 40 प्रतिशत पाठ्यक्रम ऑनलाइन करने की जरूरत है। गुणवत्तापुर्ण शिक्षा देनी होगी। ऑनलाइन परीक्षा के

युनिवर्सिटी

4 पहले यूजीसी ने ऑनलाइन शिक्षा की शुरुआत कर दी है, इसे हमें अब अपनाना होगा। नई शिक्षा नीति के अनुसार 2030 तक जीईआर 50 प्रतिशत करना है, पर छत्तीसगढ में 34 प्रतिशत ओबीसी, एससी, एसटी छात्र अध्ययन करते हैं, ऐसे में नियमित शिक्षण नहीं होने से परेशानी आएगी और जीईआर भी घटेगा, गुणवत्ता भी प्रभावित होगी। कोविड-19 में हमें दिनचर्या व व्यवहार में परिवर्तन लाना होगा। शिक्षकों के साथ-साथ छात्रों को भी ऑनलाइन शिक्षा की टेनिंग देनी होगी।

डॉ. प्रकाशमनी त्रिपाठी, अमरकंटक यनिवर्सिटी: हमें डिजिटल होना ही पडेगा। वर्चअल क्लास रूम की तरफ हमें अब जाना चाहिए। वाइ-बा स्काइप के माध्यम से की जा सकती है, पर प्रायोगिक कार्य व मूल्यांकन ऑनलाइन कैसे हो इस पर विचार करने की जरूरत है।

डॉ. केशरीलाल वर्मा पं. डॉ. एमके वर्मा, स्वामी रविशंकर युनिवर्सिटी

शिक्षा में गुणवत्ता लाने हमें टेक्नॉलॉर्जी का उपयोग करना होगा। उच्च शिक्षा जीईआर बढ़ाने की बात कर रही है। नियमित छात्र से ज्यादा प्राइवेट छात्र अध्ययनरत हैं। आनॅलाइन पद्धति में जीईआर कम होगा। कोरोना वायरस ने अध्ययन-अध्यापन की दिशा बदल दी है। ये समय हमें नवीन तकनीकी अपनाने के लिए प्रेरित किया है।

विवेकानंद यूनिवर्सिटी

कोविड-19 समस्या नहीं, अवसर है। शिक्षक को ऑनलाइन शिक्षा भी बीच क्लास रूम की तरह अनुभृति का अहसास हो। परीक्षा सब्जेक्टिव, ऑब्जेक्टिव या डिस्क्रिप्टिव हो, इस पर विचार करना सबसे ज्यादा जरूरी। क्योंकि अभी छात्र ऑनलाइन पढ़ाई के लिए तैयार नहीं है। हमें इन्हें

राघवेंद्र प्रताप तिवारी.डॉ हरिशंकर गौर सीय सागर

टेक्नॉलॉजी को समग्र रूप में देखना होगा। ई-कंटेंट को बढावा देना होगा। ओपन लर्निंग ऐसी देनी होगी कि शिक्षक व छात्रों के सिस्टम प्रारंभ करने की जरूरत है। लर्निंग आउटकम बेस पद्धति अपनाना ही होगा। युजीसी ऑनलाइन के क्षेत्र में 18 प्रकार के प्लेटफार्म दी है, उसे अधिकारिक रूप से अपनाना होगा। ऑनलाइन पद्धति अपनाने से यनिवर्सिटी, कॉलेज आने-जाने में छात्रों के पैसे व पेट्रोल खर्च हो रहे हैं। इसके पैसे भी बचेंगे। जो प्रदुषण के लिए अच्छा होगा।

डॉ. पीयष रंजन अग्रवाल, अवधेश प्रताप यनिवर्सिटी रीवाः यनिवर्सिटी व कॅलिज में केवल कंप्युटर विभाग के शिक्षक ही ट्रेंड होते हैं। इन पर सभी निर्भर रहते हैं। अब सभी विभाग के शिक्षकों को ट्रेंड होना की जरूरत है। स्टॉफ, शिक्षक व छात्रों को ऑनलाइन पद्धति के लिए ट्रेंड करना होगा।